इकाई 27 क्रांति के पश्चात् के घटनाक्रम, 1911-1919

इकाई की रूपरेखा

27.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- यह समझा सकेंगे कि क्यों 1911 की क्रांति चीन में एक बेहतर राजनीतिक व्यवस्था कायम करने में विफल रही,
- चीन में सैन्यवाद के उदय के लिए उत्तरदायी कारणों को जान सकेंगे,
- क्वोमिंतांग के एक राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरने के बारे में, और इसके एक जनाधार वाली पार्टी न बन पाने के बारे में जान सकेंगे, और
- चार मई के आंदोलन की व्युत्पत्ति और इसके क्रांतिकारी चरित्र को समझ सकेंगे।

27.1 प्रस्तावना

चीन में 1911 में वंशीय शासन का अंत हो गया। इतिहासकारों ने इस घटना को क्रांति कहा है। राजनीति के क्षेत्र में, राजतंत्र का अंत एक महत्वपूर्ण घटना ही थी, लेकिन जहां तक समूची चीनी जनता का सवाल है, 1911 की क्रांति का कोई विशेष अंतर नहीं पड़ा। फिर भी, 1911-1919 के दौर में अनेक ऐसी घटनाएँ और घटनाक्रम हुए जिनका दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा। यह दौर राजनीतिक कलह, अस्थिरता और फूट का दौर रहा जिसकी परिणति युद्ध सामंतों के उदय में हुई। इन युद्ध सामंतों के उदय से चीनी राष्ट्र की एकता के लिए खतरा पैदा हो गया। तथाकथित गणतंत्र के प्रारंभिक वर्षों में संवैधानिक जनतंत्र की दिशा में कुछ प्रयास भी हुए, लेकिन वे सफल नहीं हुए। जिस क्वोमिंतांग ने अपनी गुप्त संगठन वाली विशेषताओं को त्याग दिया था और मांचू शासन का तख्ता पलटने में सक्रिय भागीदारी की थी, उसे अनेक परीक्षाओं और कठिनाइयों से गुजरना पड़ा। आने वाले वर्षों में वह एक मजबूत राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरी। जो भी हो, 1911-1919 के दौर की सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना थी एक सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन की शुरुआत (इस पर इकाई 28 में विस्तार से चर्चा की गयी है)। बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में चलने वाले इस आंदोलन की शुरुआत 1915 के आसपास हुई और यह मई चार के आंदोलन तक अपने चरम पर पहुँच गया। इसके परिणामस्वरूप चीनी साम्यवादी पार्टी का

(1921 में) जन्म हुआ। इन आंतरिक घटनाक्रमों के अलावा, चीन की सीमा के बाहर की दो घटनाओं ने उस पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला:

1) पहला यूरोप में प्रथम विश्व युद्ध का छिड़ना, जिसमें जर्मनी की हार हुई और जापान ने चीन में जर्मनी के पहले के अधिपत्य पर अपना दावा कर दिया। (हम इकाई 21 में इक्कीस मांगों का विवेचन कर ही चुके हैं।)

2) दूसरा, रूस में अक्टूबर क्रांति का सफल होना। बोल्शेविक क्रांति ने चीन को काफी प्रेरणा दी। सोवियत राज्य ने पहले की कुछ असमान संधियों को स्वेच्छा से त्याग दिया। इसके फलस्वरूप सोवियत लोग तुरंत ही चीनियों के चहेते हो गये, और इस तरह सोवियत-चीनी सहयोग के एक लंबे दौर की शुरुआत हुई। सामान्य तौर पर कहा जाए तो, 1911-19 के दौर ने चीनी जनता के साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ने के निश्चय को दृढ़ कर दिया। इसके फलस्वरूप एक दृढ़निश्चयी और लोचदार राष्ट्रवाद का उदय हुआ।

इस इकाई में चीन के युद्ध सामंतवाद के दौर की भी चर्चा की गयी है, और क्वोमिंतांग के उदय और विस्तार और चार मई की घटना का भी विवेचन किया गया है।

27.2 राजनीतिक अस्थिरता

जनवरी 1, 1912 को नानकिंग में चीनी गणतंत्र की नयी सरकार कायम हुई। सन यात सेन इसका अंतरिम राष्ट्रपति बना। दूसरी ओर मांचू सेनाओं का भूतपूर्व सेनापति युआन शिकाइ था। युआन शिकाइ ने नव सेना का गठन किया था, लेकिन 1808 में वह मांचू दरबार की कृपापात्रों की सूची से बाहर कर दिया गया था। वह चीन का शासक बनने की महत्वाकांक्षा पाल रहा था। मांचू दरबार ने अभी औपचारिक तौर पर त्यागपत्र तो दिया नहीं था, इसलिए पर्याप्त सैनिक समर्थन रखने वाले युआन ने नानकिंग सरकार के साथ सौदेबाजी और युक्ति की। 12 फरवरी को मांचू दरबार ने गद्दी छोड़ दी और सन यात सेन ने युआन के पक्ष में त्याग पत्र दे दिया। गणतंत्र सरकार पीकिंग आ गयी और युआन शिकाइ को इसका अंतरिम राष्ट्रपति चुन लिया गया।

सन यात सेन ने अपना पद छोड़ने से पहले एक नया अंतरिम संविधान पारित करवा लिया। इस संविधान में अधिकार विधेयक और मंत्रिमंडलीय सरकार का प्रावधान रखा गया। इसका अभिप्राय यह था कि राष्ट्रपति युआन को एक मंत्रिमंडल का गठन करना होगा जो विधान सभा के प्रति उत्तरदायी होगा। सन यात सेन के साथी क्रांतिकारी इस सभा में बहुमत में थे। इसके पीछे विचार यह था कि मंत्रिमंडल युआन की व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं पर रोक का काम करे। इस तरह, पीकिंग के गणतंत्रीय शासन ने। अप्रैल, 1912 को काम करना शुरू कर दिया। सिद्धांत में, यह शासन 1928 तक चला। लेकिन वास्तव में देखा जाये तो, यह गणतंत्रीय व्यवस्था का उपहास था।

युआन शिकाइ ने पद संभालने के तुरंत बाद तांग शाओं यी का नाम नये-नये लागू हुए अंतरिम संविधान के अनुसार मंत्रिमंडल के नेता, अर्थात् प्रधानमंत्री पद के लिए प्रस्तावित कर दिया। तांग युआन का एक पुराना साथी भी था और क्वोमिंतांग क्रांतिकारियों के निकट भी था। तांग ने मंत्रिमंडल के लिए जिन मंत्रियों के नाम का प्रस्ताव रखा उन्हें सभा ने सहमति दे दी। यह एक अच्छी शुरुआत दिखायी दी और यह आशा बनी कि सन यात सेन के क्रांतिकारियों और उत्तर के (सेना समेत) पुराने तत्वों, इन दोनों गुटों के बीच कारगर एकता कायम हो जाएगी। लेकिन हमें यह याद रखना होगा कि युआन शिकाइ की महत्वाकांक्षाओं का सीधा टकराव संवैधानिक शक्ति के साथ था जहां शक्ति या सत्ता कई व्यक्तियों में बंटी होती है।

युआन के समर्थकों में मांचू दरबार के उच्चाधिकारी, पूर्ववर्ती दौर के सुधारवादी और उसकी अपनी सेना और नागरिक अनुचर शामिल थे। उसने जिस नव सेना का गठन किया था, उसके सेनापतियों का भी पूरा समर्थन उसे प्राप्त था। उसकी तुलना में तांग शाओं यी के समर्थन का आधार कहीं कमजोर था। मंत्रिमंडल के गठन के लगभग तुरंत बाद, युआन ने नियुक्तियों और नीतियों के मामलों पर तांग शाओं यी के साथ असहमति जतानी शुरू कर दी। युआन का असहयोगी रवैया इतना असहनीय हो चला कि तांग ने क्षुब्ध होकर तीन महीने के अंदर ही मंत्रिमंडल छोड़ दिया। उसके बाद जो मंत्रिमंडल बने उनमें अधिकतर

युआन के अनुयायी और नौकरशाह [illegible]
कोई शक्ति परीक्षण नहीं चाहती थी इसलिए वह न चाहते हुए भी मंत्रिमंडल को अपना
समर्थन देती रही।

सन् 1912-13 की सर्दियों में संसद के चुनाव हुए। क्वोमिंतांग के रूप में पुनर्गठित क्रांतिकारियों के लिए यह एक अवसर था शांतिपूर्ण ढंग से युआन के प्रभाव को समाप्त कर देने का। जैसी कि अपेक्षा थी, वे संसद के दोनों सदनों में बहुमत लेकर विजयी हुए। और, उनका संसदीय नेता, सुंग चियाओजेन, मंत्रिमंडल के नेतृत्व के लिए पूरी तौर पर तैयार था। 10 मार्च, 1913 को शंघाई रेलवे स्टेशन पर पीकिंग के लिए रेलगाड़ी पर सवार होते समय उसकी हत्या कर दी गयी। पूरा देश सकते में आ गया। युआन ने सामान्य ढंग से हत्या की जांच के आदेश दे दिये। उसी समय युआन विदेशी बैंकरों से ऋण लेने का प्रयास कर रहा था, जो चीन की ढहती अर्थव्यवस्था के लिए निर्णायक था। जांच में राष्ट्रपति युआन का हत्या में सीधे शामिल होना पाया गया। जिस दिन जांच के निष्कर्ष सार्वजनिक किये गये, उसी दिन युआन ने यह ऐलान किया कि विदेशी बैंकर अति वांछित ऋण देने को सहमत थे। इससे कुछ लोगों का ध्यान तो जरूर उधर से हट गया, लेकिन इसके कारण क्वोमिंतांग और युआन शिकाइ के रास्ते हमेशा-हमेशा के लिए अलग हो गये। युआन ने मनमानी करनी शुरू कर दी। वह अक्सर संसद की भी अवहेलना कर देता। यहां तक कि पुनर्गठन ऋण कहलाने वाले विदेशी ऋण के लिए बातचीत भी संसद की सहमति के बिना कर ली गयी। जो भी हो, युआन के लिए तो ऋण की मंजूरी का यही मतलब निकला कि उसकी सरकार को विदेशी ताकतों की अंतिम मान्यता प्राप्त हो गयी। उसके अपराध का उसे कोई दंड नहीं मिला। साम्राज्यवादी ताकतें भी, स्पष्ट कारणों से किसी लोकप्रिय नेता की तुलना में एक तानाशाह और चालबाज को अधिक पसंद करती थीं।

सुंग की हत्या से पहले, क्वोमिंतांग के नेताओं में युआन के प्रति रवैये को लेकर एकता नहीं थी। लेकिन, इस जघन्य अपराध ने उन सबको युआन की निंदा के लिए एक सूत्र में बांध दिया। जुलाई 1913 में, कुछ दक्षिणी प्रांतों में शासन कर रहे क्वोमिंतांग गवर्नरों ने विद्रोह कर दिया। विदेशी मान्यता से साहस लेकर युआन ने क्वोमिंतांग का विरोध कर दिया, इससे जुड़े सैनिक गवर्नरों को हटा दिया, उनके विद्रोह को दबा दिया, राजनीतिक संगठन के रूप में क्वोमिंतांग को भंग कर दिया, संसद को निलंबित कर दिया और फिर प्रांतीय सभाओं और मुख्य परिषदों को समाप्त कर दिया। उसने अपने आपको आजीवन राष्ट्रपति घोषित कर दिया और यह भी ऐलान कर दिया कि वह राजतंत्र की बहाली करेगा और अपने खुद के वंश का सूत्रपात करेगा। युआन ने 1914 में एक नया अंतरिम संविधान लागू करवा लिया। इस संविधान के तहत उसका शासन सर्वोच्च और कानून के दायरे से मुक्त हो गया। इस संविधान का अंतिम लक्ष्य चीन में राजतंत्र की बहाली और युआन को नया सम्राट बनाना था। जिस समय चीन में यह सब कुछ हो रहा था, जापान ने उसके सामने अपनी कुख्यात इक्कीस मांगें रख दीं। इसीलिए, यह माना जाता है कि युआन ने जो चालें चलीं थीं उनमें जापान के साथ उसकी सांठगांठ थी (देखिए इकाई-21)।

जो भी हो, युआन की योजनाओं ने (लयांग ची चाओं के नेतृत्व में) नरमपंथी प्रगतिशीलों और क्रांतिकारियों को एक कर दिया। पूरे देश में युआन के खिलाफ एक अभियान छेड़ दिया गया। इस अभियान का नारा था "गणतंत्र बचाओ"। प्रांतों ने पीकिंग शासन से अपनी स्वाधीनता की घोषणा करनी शुरू कर दी, और क्वोमिंतांग के सेनापतियों और प्रगतिशीलों के नेतृत्व में राजतंत्र विरोधी अभियान शुरू हो गये। आंदोलन इतना प्रचंड था कि युआन शिकाइ को मार्च 1916 तक अपनी तमाम राजाज्ञाओं को वापस लेना पड़ा। वह अपने राष्ट्रपति पद के कामों को इस तरह करता रहा मानो कुछ हुआ ही न हो। चीनी इतिहास का युआन शिकाइ अध्याय जून 1916 में उसकी स्वाभाविक मृत्यु के साथ समाप्त हो गया।

27.3 युआन काल के पश्चात् की घटनाएँ

युआन की मृत्यु होने पर, उप राष्ट्रपति ली युआन हांग को राष्ट्रपति बना दिया गया और 1912 के अंतरिम संविधान को फिर से लागू करने के प्रयास किये गये। 1916 और 1917 के वर्षों में संविधान में जबरदस्त फूट पड़ी। एक ओर तो वे लोग थे जिनका क्वोमिंतांग के साथ गठबंधन था, और वे और प्रगतिशील एक-दूसरे के विरोधी थे। दूसरी ओर राष्ट्रपति

ली और प्रधानमंत्री तुआन ची जुई के बीच गंभीर मतभेद थे। उनके बीच इन मुद्दों को लेकर मतभेद थे कि चीन किस तरह का संविधान अपनाये और उसे जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा करने में मित्र ताकतों के साथ शामिल होना चाहिए या नहीं। विवाद उस बिंदु पर पहुँच गया कि राष्ट्रपति ली ने प्रधानमंत्री तुआन को निकाल दिया क्योंकि संसद में बहुमत उसके खिलाफ था। तुआन भी नव सेना की देन और उत्तरी सेना का एक शीर्ष नेता था। अपने निकाले जाने के विरुद्ध, बदले की कार्यवाही के तौर पर उसने उत्तरी सैन्यवादियों को इस बात के लिए उकसाया कि वे राष्ट्रपति और संसद की निंदा करें। इसका परिणाम यह हुआ कि सरकार सचमुच ठप्प हो गयी। ली युआन हांग उस मांचू वंश का सैनिक था जिसका तख्ता पलटा जा चुका था। वह इस स्थिति से निपटने में असमर्थ था, इसलिए उसने दखल के लिए चांग शुन को बुलाया। चांग की सेनाओं ने पीकिंग में प्रवेश किया। ली यानहांग को सलाह दी गयी कि वह संसद को भंग कर दे। 1 जुलाई, 1917 को चांग ने तख्ता पलट करके मांचू वंश की बहाली कर दी। लेकिन वह सैनिक दृष्टि से मजबूत नहीं था, और तुआन ची जुई ने गणतंत्र का झंडा उठाकर उसका सामना किया। पीकिंग और उसके आसपास के सैनिक बलों के भारी समर्थन के बूते पर तुआन बहाल मांचू वंश समाप्त करने में सफल रहा। उसने विजयी होकर पीकिंग में प्रवेश किया और राष्ट्रपति ली के पास उसे दुबारा प्रधानमंत्री नियुक्त करने के अलावा कोई चारा नहीं रह गया। तुआन ने ली को राष्ट्रपति नहीं रहने दिया और उसकी जगह उप राष्ट्रपति फेंग क्वो-चांग ने ले ली। पूर्ववर्ती नव सेना में, तुआन और फेंग का स्थान केवल युआन शिकाइ से नीचे था और वे कट्टर शत्रु थे। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के रूप में उनका टकराव और भी गंभीर हो गया। इस तरह चीनी इतिहास की सबसे दुर्भाग्यशाली घटना की शुरुआत हुई। यह घटना थी युद्ध सामंतवाद। उत्तरी सैन्यवादियों के बीच आपसी मारामारी का यह दौर कई वर्षों तक चलता रहा जिसमें चीन का भारी नुकसान हुआ और उसकी एकता को खतरा पैदा हो गया।

27.4 युद्ध सामंत और युद्ध सामंतवाद

पीकिंग में, तुआन और फेंग की गणतंत्रीय सरकार ने नये कानूनों के तहत एक नयी संसद का चुनाव कराया जिसकी बैठक अगस्त 1918 में हुई। इसे आगे चल कर किराये के राजनीतिक गुट आनफू के कारण, आनफू संसद के नाम से जाना गया। आनफू संसद ने, संविधान के प्रति प्रतिबद्धता दिखाते हुए, अपने एक वर्ष के काल, 1918-1919 में कुछ उपाय किये। उसने एक संवैधानिक आयोग की नियुक्ति की जिसने 12 अगस्त, 1919 को एक नये संविधान प्रारूप को अपनाया।

कैंटन, अर्थात् दक्षिण चीन में एक अलग सरकार चल रही थी, क्योंकि दक्षिण ने युआन शिकाइ के खिलाफ विद्रोह कर दिया था। यह सरकार भी अस्थिर थी। कभी वह सन यात सेन के नियंत्रण में रही तो कभी सैनिक नेताओं के अधीन। कुल मिलाकर उत्तर और दक्षिण दोनों जगहों में मनमुटाव और कलह और भयंकर अव्यवस्था समान थी। राजनीतिक स्थिति से क्षुब्ध होकर सन यात सेन के कैंटन छोड़ देने के बाद उत्तर और दक्षिण के बीच 1919 के अंतिम महीनों में, शांति के लिए बातचीत का दौर शुरू हुआ। यह दौर काफी समय तक चला, लेकिन 1928 तक न तो शांति ही कायम हुई और न ही एकता। उस वर्ष च्यांग काई शेक की क्वोमितांग सेना ने सैनिक दृष्टि से चीन में एकता कायम कर दी। लेकिन विभिन्न युद्ध सामंती गुटों में राजनीतिक संघर्ष और विभिन्न सैनिक सत्ता केन्द्रों के बीच आपसी मारामारी लगातार चलती रही। ऊपर जिन नामों का उल्लेख किया गया है, उनके अलावा कुछ प्रमुख युद्ध सामंत थे: त्साओ कुम और ब्रू पे फू, शिती चांग और चांग त्सोलिन।

इस दौर के अनुभव ने यह सिद्ध कर दिया कि युआन शिकाइ और दूसरे सैनिक नेताओं में मौलिक कल्पना की कमी थी। छद्म गणतंत्र कायम करने के प्रयास बार-बार विफल हुए और चीनी जनता के लिए उसका कोई अर्थ नहीं निकला। उनके लिए न तो इसमें राजनीतिक स्थिरता ही मिली और न ही भौतिक सुख-समृद्धि। चरित्रहीन सैनिक राजनीतिज्ञों ने इस स्थिति का लाभ उठाते हुए केवल अपने व्यक्तिगत हितों को ही साधा, जो कि राष्ट्रीय हित के प्रतिकूल थे।

युद्ध सामंतवाद का असली संस्थापक, युआन शिकाइ, 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में शक्तिशाली होकर उभरा था। वह यह समय था जब मांचू सरकार के लिए सेना को एक

करने की जिम्मेवारी उसके ऊपर थी। पहले भी, कमजोर होते साम्राज्य ने अपने शत्रुओं से लड़ने के लिए निजी सेनाएँ संगठित करने की छूट दी हुई थी। अंत में साम्राज्य के लिए यह आत्मघाती सिद्ध हुआ, क्योंकि युआन की नवसेना उसके खिलाफ हो गयी। इसका परिणाम यह भी हुआ कि सेना चीनी राजनीति में गहराई से शामिल हो गयी और यह प्रवृत्ति बाद के दौर में भी बरकरार रही। क्वोमिंतांग और साम्यवादी पार्टी दोनों के लिए एक मजबूत सैनिक समर्थन के अभाव में राजनीतिक सत्ता प्राप्त करना असंभव था।

जो भी हो कुछ युद्ध सामंतों ने सत्ता हथियाने के बाद सुधारक बनने का प्रयास किया। उन्होंने जनता को कुछ आर्थिक लाभ दिलाने के प्रयास किये। लेकिन, इससे पहले कि वे कुछ कर पाते, वे सत्ता संघर्ष के पचड़े में फंस गये। बड़े युद्ध सामंतों का वर्णन करते हुए, जॉन फेयर बैंक ने टिप्पणी की है कि:

> "एक अर्थ में बड़े युद्ध सामंत राजनीतिक शक्ति के गंभीर विघटन के प्रतीक थे। उन्होंने एक ऐसे नितांत खंडित समाज के शीर्ष पर बैठने का प्रयास किया जिसमें स्थानीय गुंडे, डाकू, सरदार और छोटे युद्ध सामंत सभी एक बदतर होती राजनीतिक अव्यवस्था के प्रतीक थे।"

युद्ध नेतागीरी की दुर्भाग्यशाली घटना और उसकी राजनीति को दो कोणों से देखा जा सकता है :

i) प्रांतों के दृष्टिकोण से यह प्रादेशिक सेनाओं का अध्ययन है और

ii) केंद्र के कोण से देखने पर पीकिंग के वर्तमान राजनीतिक और सैनिक संघर्षों का परीक्षण आवश्यक हो जाता है।

इन दो दृष्टिकोणों से हमें चीनी इतिहास में युद्ध सामंतवाद के स्थान का मूल्यांकन करने में मदद मिलती है।

आसान शब्दों में कहें तो, युद्ध सामंत वह व्यक्ति होता था जिसके पास एक निजी सेना होती थी, जिसका किसी क्षेत्र पर कब्जा या कब्जे का प्रयास होता था, और वह कमोबेश स्वाधीन रहकर कार्य करता था। युद्ध सामंत के लिए प्रचलित चीनी शब्द "**चुन-फा**" का अर्थ होता है कि एक ऐसा स्वार्थी सेनापति जिसमें सामाजिक चेतना अथवा राष्ट्रीय भावना नहीं के बराबर होती है। कुछ लोगों का यह तर्क है कि उस समय के सैनिक नेताओं में जो विविध व्यक्तित्व पाये जाते थे, उनके लिए "प्रादेशिक अथवा क्षेत्रीय सैन्यवादी" शब्द कहीं अधिक तटस्थ है। अन्य लोगों का तर्क यह है कि "युद्ध सामंत" कहीं अधिक उपयुक्त शब्द है क्योंकि इसमें हिंसा और नागरिक प्राधिकार हड़प लेने के अर्थ निहित हैं। जो भी हो, युद्ध सामंत की पहचान उसके लक्ष्यों से नहीं, इस बात से होती थी कि वह किस प्रकार का अधिकार चलाता था। उनके युद्ध सामंत क्योंकि किसी प्रांत के सैनिक गवर्नर थे, इसलिए "**फू-चुन**" शब्द का इस्तेमाल युद्ध सामंत अथवा प्रादेशिक सैन्यवादी के पर्याय के रूप में किया जाता है।

युद्ध सामंतों में विविधता थी और उनके चरित्र और नीतियों का जो सामान्यीकरण किया जाता है, उनमें से अधिकांश की अपनी सीमाएँ हैं. युआन शिकाइ की मृत्यु के बाद के पहले दो या तीन वर्षों में जो युद्ध सामंत प्रमुख थे, वे चिंग सैनिक स्थापनाओं में वरिष्ठ अधिकारी रह चुके थे। इन सामंतों का चिंतन और उनके मूल्य कन्फ्यूशियसी सांचे में ढले थे। तुआन ची जुई, फेंग क्वो-चुंग और फांग शू इसी श्रेणी के युद्ध सामंत थे। 1920 के दशक के प्रारंभिक वर्षों तक, युद्ध सामंतों की एक दूसरी पीढ़ी उभर कर सामने आने लगी थी। इनमें से अनेक अत्यंत साधारण पृष्ठभूमि से थे। सैकड़ों युद्ध सामंतों में से, बहुत कम के विषय में ही हमारे पास जानकारी है, जिसके बल पर ही हम उनकी विशेषताओं के बारे में कोई गहन अध्ययन कर सकते हैं। लेकिन, उन सबके पास निजी सेनाएँ थीं और उनका किसी क्षेत्र पर कब्जा या कब्जे का प्रयास था।

27.4.1 सेनाएँ, गुट और राज्यतंत्र

युद्ध सामंतों की सेनाओं के पास संगठन की स्वायत्तता होती थी जिसके कारण दूसरे सेनापतियों को वे विरासत में अक्षुण्ण मिल जाती थी। वे किसी एक व्यक्ति के प्रति व्यक्तिगत निष्ठा से बंधी नहीं थी। वास्तव में तो, राजनीतिक लाभ के लिए किसी सेनापति के निकटतम समर्थक भी उसे किसी भी समय छोड़ सकते थे। फिर भी, "निजी सेना" का जुमला एक दो संबंधित कारणों से उपयुक्त है :

i) पहला, सेना के उपयोग के विषय में निर्णय खुद सेनापति का चलता था, उसके वरिष्ठ अधिकारियों का नहीं। वाहिनी (ब्रिगेड) का ऐसा सेनापति सामान्य तौर पर युद्ध सामंत नहीं होता था जो अपनी वाहिनी को कर्तव्यपूर्वक वहां ले जाता था जहां उसके वरिष्ठ अधिकारी आदेश देते थे। युद्ध सामंत वह होता था जो अपने स्तर पर इस बात का निर्णय लेता था कि वह अपनी वाहिनी के साथ क्या करेगा, या क्या नहीं करेगा। दिशा हमेशा स्पष्ट नहीं थी, लेकिन अंतर वास्तविक थे। इस तरह, सेना इसलिए निजी सेना होती थी क्योंकि सैनिकों की नियुक्ति उनका सेनापति स्वाधीन होकर करता था और उन्हें उसके निजी आदेश पर चलना होता था, और उनका इस्तेमाल उसके वरिष्ठ अधिकारियों के खिलाफ भी किया जा सकता था।

ii) दूसरा, कोई सेनापति उस स्थिति में इस तरह का स्वाधीन अधिकार अपने पास संभवतः अधिक रखता था जहां उसके और उसके कुछ महत्वपूर्ण अधिकारियों के बीच स्नेह, निष्ठा या कर्तव्य के निजी संबंध उनके सांगठनिक संबंधों से ऊपर निकल जाते थे।

शुरुआती दौर में सैनिक अनुशासन चीनी सेना की विशेषता तो रही, लेकिन बाद में दूसरे सैन्यवादियों के साथ टकराव के प्रत्येक जगह मौजूद खतरे के सामने और कमजोर सरकारी संस्थाओं और उनकी अपनी कार्यवाहियों की संदिग्ध वैधता के संदर्भ में युद्ध सामंतों ने अपनी सेनाओं पर अपने प्राधिकार को मजबूत करने का प्रयास किया। इस प्रयास में उन्होंने चीनी परंपरा में लंबे समय से पवित्र माने गये व्यक्तिगत संबंधों का लाभ उठाया। युद्ध सामंतों ने इस तरह के जिन संबंधों का इस्तेमाल अपने लाभ के लिए किया उनमें शिक्षक-छात्र के पारिवारिक संबंध और एक ही विद्यालय से पढ़ाई पूरी करने वालों के बीच के संबंध, विशेषकर एक ही कक्षा में पढ़े छात्रों के बीच संबंध और व्यक्तियों के बीच स्थापित संबंध शामिल थे। युद्ध सामंतों ने तो इस प्रकार के व्यक्तिगत संबंधों का इस्तेमाल अपने अधिकारियों में निष्ठा का भाव पैदा करने के लिए किया और उनके मातहतों के अक्सर अपने खुद के मातहतों के साथ इसी प्रकार के संबंध होते थे। कुछ सेनापतियों ने इन द्वैतीयक (या दूसरे स्तर पर पायी जाने वाली) निष्ठाओं को कम से कम करने और तमाम स्वामिभक्ति को अपने पर केंद्रित करने का प्रयास किया। लेकिन इन निष्ठाओं को समाप्त करना कठिन काम था। इस दूसरे स्तर पर पायी जाने वाली निष्ठा ने सैनिक संगठन में कमजोरी का रूप ले लिया था। होता यह था कि जब कोई मातहत सेना से छूट कर अलग होता था तो वह अपने साथ अपने अनुयायियों और उनके आदमियों को भी ले जाता था। इसलिए, एक सेना से टूट कर दूसरी सेना में मिल जाने के निमंत्रण युद्ध सामंतों की राजनीति की एक अहम चाल बन गए।

इन सामंतों की सेनाओं के सैनिक अधिकांश वे किसान थे जिन्होंने घोर गरीबी भोगी थी। 1916 में, इन सेनाओं में लगभग पांच लाख लोग थे और 1928 तक इनकी संख्या बढ़ कर 20 लाख से भी ऊपर हो गयी। अनेक लोगों के लिए सेना एक ऐसा शरणस्थल था जहां वे जिंदा रह सकते थे। दूसरे लोग इसे एक गरीब अनपढ़ आदमी के लिए ऊँचा उठने का अवसर मानते थे। कुछ स्थितियों में, जहां सेनापति अपनी सेना को नियमित वेतन नहीं दे पाते थे, वहां सैनिक आशा रखते थे कि वे लूटपाट के जरिए अपना मेहनताना निकाल लेंगे। लड़ाई एक तरह की भर्ती भी होती थी, क्योंकि अक्सर जीतने वाला युद्ध नेता पराजित सेना को अपनी सेना में मिला लेता था। इन सेनाओं ने चीनी सेना को बहुत बदनामी दिलवायी। उन्हें प्लेग, दुष्ट, विनाशकारी, निर्दयी के रूप में देखा जाता था।

क्षेत्रीय कब्जे के बिना एक स्वाधीन सेना बनाये रखना कठिन काम था। क्षेत्र पर कब्जा होने से युद्ध सामंत को एक सुरक्षित अड्डा और राजस्व सामग्री और आदमी मिल जाते थे। बिना क्षेत्रीय अधिकार वाला सेनापति किसी और के अधिकार क्षेत्र में एक असुरक्षित अतिथि होता था। उसे एक अधीनस्थ परिस्थिति के साथ नियंत्रण अथवा क्षेत्र पर अधिकार के लिए लड़ना होता था। क्षेत्रीय नियंत्रण होने से एक मनमाने से मनमाने युद्ध सामंत को भी वैधता मिल जाती थी। इसमें शासन और प्रशासन की जिम्मेदारी भी शामिल होती थी। युद्ध सामंत की सरकार के चरित्र और क्षमता में अत्यंत विविधता होती थी। कुछ सरकारों में प्रगतिशीलता देखने को मिलती थी तो दूसरी सरकारें कट्टर रूढ़िवादी होती थीं, सभी सरकारों में सेना का स्थान सबसे प्रमुख होता था, इसलिए नागरिक या गैर-सैनिक अधिकारी सैनिक गवर्नर के अधीन होते थे।

युद्ध सामंतों की सरकारों की गहन चिंता का विषय होता था युद्ध सामंत और उसके मुख्य मातहतों की निजी श्रीवृद्धि के लिए और सेना को हथियार, रसद और वेतन उपलब्ध कराने

के लिए कोष जुटाना। सरकार अक्सर सभी स्तरों पर युद्धों और सैनिकों के तेजी से बदलने से अव्यवस्थित रहती थी और अनेक युद्ध सामंत अपने क्षेत्रीय आधिपत्यों को अस्थायी मानते थे, इसलिए उनके लिए राजस्व जुटाने के स्थापित तरीकों पर हमेशा निर्भर करना संभव नहीं था। जिस तरह भी संभव होता था, वे आक्रामकता और कल्पना के सहारे धन और संसाधन जुटाने का प्रयास करते थे। राजस्व का बुनियादी स्रोत भूमि कर था जिसे तमाम प्रथाओं और रीतियों को ताक पर धर कर जमा किया जाता था। वे महत्वपूर्ण वस्तुओं पर सरकार का एकाधिकार भी जमाते थे। वे रेल मार्गों पर कब्जा करते और उन्हें खुद चलाते थे, नमक पर पूरक कर लगाते थे, और इधर से उधर ले जाये जाने वाली वस्तुओं पर कर लगाते थे। अफीम की बिक्री पर रोक लगाने के नाम पर, भारी कर वसूले जाते थे। व्यापारियों का आम करों के अलावा और भी तरीकों से दोहन किया जाता था। कोष जमा करने के इन प्रयासों के बावजूद प्रांतीय सरकारें अक्सर दिवालियेपन की कगार पर रहती थीं। सरकारी खर्चों के लिए बहुत ही कम धन रहता था। कारण आसान था: अधिकांश धन सैनिक सामंतों की निजी संपत्ति बनाने या सेना के रख-रखाव में इस्तेमाल हो जाता था।

प्रमुख युद्ध सामंत गुटों के सदस्य होते थे। ये गुट समान व्यक्तिगत हितों से आपस में उसी तरह बंधे होते थे जैसे राजनीतिक घटक एक-दूसरे से बंधे रहते हैं। लेकिन युद्ध सामंतों के गुटों का जुड़ाव ढीली-ढीली संबद्धता वाले गुटों से संबद्ध होने वाले लोग बुनियादी तौर पर अपना-अपना लाभ देखकर उनसे जुड़ते थे। लेकिन व्यक्तिगत साथ और बंधन की भी भूमिका होती थी, जो विशेषकर मजबूत एकता वाले गुटों में देखने को मिलती थी। महत्वपूर्ण संबंध प्रत्येक गुट के सदस्य और उसके नेता के बीच होता था। गुट के सदस्यों के बीच के व्यक्तिगत, स्वाभाविक संबंध कमजोर या अनुपस्थित हो सकते थे। गुट के सदस्यों और नेता के बीच के व्यक्तिगत संबंध ठीक वैसे ही होते थे जिनका उल्लेख पहले युद्ध सामंत की सेनाओं के पूरक संबंधों के रूप में किया जा चुका है, अर्थात्, पारिवारिक संबंध, शिक्षक-छात्र और संरक्षक-संरक्षित संबंध, समान प्रांतीय या स्थानीय मूल के संबंध. मित्रता, अकादमी या स्कूल के संबंध।

गुट युद्ध सामंतों के गुटों के अंदर भी बन जाते थे। उदाहरण के लिए, चीली गुट दो गुटों में बंट गया: एक वू पेई-फू के अधीन और दूसरा जाओ कुन के अधीन। जाओ गुट फिर से विघटित हो गया। इन गुटों में इस बात को लेकर तू-तू मैं-मैं होती रही कि कौन किस पद पर रहेगा और किसके पास कौन सा राजस्व रहेगा। गुट फेंगतीयुन गुटों में भी रहे, जो आगे चलकर "नये" और "पुराने" गुटों के नाम से जाने गये, क्योंकि इन गुटों में आधुनिक सैनिक प्रशिक्षण पाये युवा अधिकारियों और चिंग सेना की सेवा में रह चुके अधिकारियों के बीच स्पष्ट मतभेद थे।

27.4.2 युद्ध

स्थानीय प्रादेशिक और राष्ट्रीय स्तरों पर वास्तव में सैंकड़ों हथियार बंद छोटी और लंबे समय की, झड़पें हुईं। अनेक युद्ध तो प्रांत या गांव जैसे किसी प्रशासनिक क्षेत्र पर कब्जे के लिए छेड़े गये। दूसरे युद्ध प्रशासनिक क्षेत्रों के पार स्थानीय या प्रादेशिक आर्थिक तंत्रों के कब्जे के लिए लड़े गये। बड़े गुटों के बीच हुए युद्धों की ओर लोगों का ध्यान कहीं अधिक रहा क्योंकि ऐसे युद्ध ही इस बात का निर्धारण करते थे कि पीकिंग की राष्ट्रीय सरकार पर किसका प्रभुत्व रहेगा। होता यह था कि जब एक गुट एक वचन देता कि वह अपनी शक्ति बढ़ाकर दूसरे सैन्यवादियों को रोके रखेगा और एक शुद्ध केंद्र-केंद्रित नियंत्रण बनायेगा, तभी दूसरे प्रमुख युद्ध सामंत अस्थायी तौर पर अपनी ताकत संयुक्त करके उस गुट को गिरा देते। इस तरह, 1920 में चीली और फेंगतीयुन गुटों ने आपस में सहयोग करके पीकिंग सरकार में आनस्वे गुट की शक्ति को समाप्त कर दिया, और अधिकांश प्रांतों को विजेताओं के हवाले कर दिया।

वैसे तो प्रत्येक युद्ध में एक स्पष्ट विजेता उभर कर सामने आया, फिर भी अधिक गहन अर्थ में ये युद्ध अधूरे ही रहे, क्योंकि किसी भी गुट के पास सरकार की राजनीतिक शक्ति का विकास करने के लिए कोई लंबे समय की योजना नहीं थी। प्रत्येक युद्ध सामंत का प्रमुख लक्ष्य अपना अलग और व्यक्तिगत था: अर्थात् अपनी शक्ति को अधिक से अधिक करना। प्रत्येक व्यक्ति इसलिए किसी गुट का सदस्य नहीं था कि वह उस गुट के लक्ष्यों में अपना योगदान देना चाहता था, बल्कि इसलिए कि वह ऐसी स्थिति में अपना योगदान देना चाहता था, जिसमें उसका अपना व्यक्तिगत लाभ हो। किसी गुट के नेता के लिए यह तो

संभव था कि वह देश को एकता के सूत्र में बांधने की आशा करे, लेकिन वह एक दल पर अकेला खड़ा होता था। प्रत्येक गुट के नेता की एकता को लेकर न केवल एक सरल धारणा होती थी, बल्कि उसके लक्ष्य की प्राप्ति उसके शत्रुओं और समर्थकों दोनों के लिए खतरा भी बनी रहती थी। इसका कारण यह था कि उस युद्ध सामंत के सत्ता के सपनों के पूरा होने का अर्थ होता था उनके हाथ से स्वाधीनता का छिनना, जो कि युद्ध सामंतों के रूप में उनकी स्थिति का मूल था। युद्ध सामंतों के गुटों के लक्ष्यों का अस्थायी और कम समय का होना इस दौर की अत्यधिक अस्थिरता का एक प्रमुख कारण था। सैनिक मुठभेड़ों के रूप में कुछ बड़े युद्ध बहुत कम समय के थे, लेकिन युद्ध सामंतवाद के युग की आम प्रवृत्ति यह रही कि इस दौर में बड़ी-बड़ी सेनाएँ कहीं बड़े लंबे समय के और खून-खराबे वाले युद्धों में लगी रहीं।

27.4.3 युद्ध सामंत और विदेशी ताकतें

युद्ध सामतवाद से फैली अव्यवस्था और पीकिंग सरकार की स्थायी कमजोरी का परिणाम यह हुआ कि चीन विदेशी दबावों और अतिक्रमणों के प्रति विशेष रूप से असुरक्षित हो गया। लेकिन साथ ही साथ, इस व्यापक अव्यवस्था के कारण विदेशी गतिविधियाँ सीमित रहीं और विदेशी उद्यमों के हाथों चीन के आर्थिक शोषण में बाधा पड़ी। युद्ध सामंतों ने समय-समय पर विदेशी फर्मों पर कराधान को मनमाने ढंग से बढ़ा दिया। सिपाहियों और लुटेरों ने विदेशी जान-माल को नुकसान पहुंचाया। उदाहरण के लिए, सात वर्षों की अवधि में एक ही जिले में 153 अमेरिकी व्यक्तियों या फर्मों को लूट लिया गया। लूटमार और युद्ध ने सामान्य व्यापार और व्यापारिक गतिविधियों को छिन्न-भिन्न कर दिया।

विदेशियों ने इन स्थितियों का जवाब धमकी और कुंठा में दिया। विदेशी प्रतिनिधियों ने पीकिंग स्थित चीनी सरकार के आगे लगातार विरोध प्रकट किया। लेकिन केंद्रीय अधिकारी अपनी कमजोरी के कारण कोई प्रभावी कार्यवाही नहीं कर सके। विदेशी ताकतों को अक्सर विशिष्ट स्थानीय मामलों को लेकर स्थानीय या प्रादेशिक सैनिक नेताओं के साथ संपर्क करने को बाध्य होना पड़ता था।

विदेशी जिस व्यवस्था की शिकायत करते थे, अक्सर उस अव्यवस्था में उनका अपना भी योगदान होता था। संपन्न विदेशी सिपाहियों ने चीनी युद्धों में सचमुच भूमिका निभायी। उदाहरण के लिए, एक अंग्रेज एक युद्ध सामंत के शस्त्रागार का संचालन करता था। और एक और युद्ध सामंत के लिए तीन अमेरिकी विमान चालकों ने कुछ महीनों तक बमवर्षक विमान उड़ायें। कहीं अधिक महत्वपूर्ण तथ्य तो यह था कि चीनियों की बंदूकों के लिए तृप्त न होने वाली मांग का जवाब विदेशियों ने कानूनी पाबंदियों के बावजूद चीन में हथियारों का आयात करके दिया। शस्त्र व्यापारियों ने हथियार खरीदने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के हाथों हथियार बेच डाले। उन्होंने यह भी चिंता नहीं की कि इसके राजनीतिक परिणाम क्या हो सकते थे। कुछ विदेशी सरकारों ने वास्तव में कुछ चुने हुए नेताओं को प्रायोजित किया। उदाहरण के लिए युद्ध सामंतवाद के इस पूरे दौर में जापान चीनी सैन्यवादियों के साथ स्पष्ट तौर पर शामिल रहा।

सन् 1916 में जापानी सरकार ने आनवे गुट के नेता तुआन जी हुई को पूरा समर्थन देने की नीति चलायी। इसका उद्देश्य चीन और जापान के बीच वित्तीय बंधन और राजनीतिक और आर्थिक सहयोग के निकट संबंध स्थापित करना था। आगामी दो वर्षों के दौरान जापान ने युआन को 15 करोड़ येन से भी अधिक दिए। यह राशि प्रकट तौर पर तो राष्ट्रीय विकास के लिए दी गयी थी, लेकिन युआन ने इसका इस्तेमाल व्यापक तौर पर अपने ही राजनीतिक और सैनिक उद्देश्यों के लिए किया। दोनों सरकारों के बीच एक सैनिक समझौता भी हुआ जिसके तहत जापान को चीन को सहायता और सलाहकार देने थे, जिससे चीन प्रथम विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्रों की मदद के लिए युद्ध भागीदारी सेना का गठन करता। यह सेना कभी यूरोप नहीं गयी, बल्कि उसने युआन की सैनिक शक्ति का विस्तार करने का काम किया। इससे जापान को चीन का राजनीतिक और आर्थिक अतिक्रमण करने में बहुत मदद मिली।

27.4.4 पीकिंग का दृष्टिकोण

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, पीकिंग स्थित राष्ट्रीय सरकार युद्ध सामंतवाद युग के 12 वर्षों में भयंकर रूप से अस्थिर रही। सात व्यक्तियों ने इस बीच राज्याध्यक्ष का पद संभाला। उनमें से एक तो दो बार इस पद पर रहा। इस तरह, वास्तव में आठ

शासनाध्यक्ष सत्तारूढ़ रहे। विद्वानों की गणना के अनुसार, चौबीस मंत्रिमंडल, पाँच संसदें या राष्ट्रीय सभाएँ और कम से कम चार योगदान या बुनियादी कानून इस बीच रहे। व्यक्तियों, अधिकारियों और कानूनी और राजनीतिक बदलावों की इस भरमार के कारण पीकिंग की राजनीति का कोई स्पष्ट तर्कसंगत विवरण देना कठिन हो जाता है। युआन की मृत्यु के बाद, तुआन सबसे शक्तिशाली व्यक्ति के रूप में उभर कर सामने आया था। वह युआन की सरकार में भी प्रधानमंत्री रह चुका था। उसे गणतंत्रवादियों का कोई समर्थन प्राप्त नहीं था। गणतंत्रवादी तुआन का विरोध करने की गरज से दूसरे सैन्यवादियों के साथ हो लिए थे। तुआन ने अपनी ओर से अपने आपको एक मजबूत स्थिति में रखने के लिए अपने सैनिक आधार को और भी शक्तिशाली बना लिया। यह तनाव 1917 में विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्रों की ओर से चीन की भागेदारी के मुद्दे को लेकर चरम पर पहुँच गया। 1917 और 1920 के बीच एक के बाद एक सैनिक गुट उभरे, जिससे चीनी समाज ध्वंस के कगार पर पहुँच गया।

बोध प्रश्न 1

1) लगभग 10 पंक्तियों में 1911-1916 के दौरान चीन में राजनीतिक अस्थिरता के कारणों का विवेचन कीजिए।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

2) निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही (✓) है, और कौन-सा गलत (×)? निशान लगाइए।

   i) चीनी गणतंत्र की स्थापना नानकिंग में 1 जनवरी, 1912 को हुई।

   ii) युआन शिकाइ का युद्ध सामंतवाद से कोई लेना-देना नहीं था।

   iii) जापान ने युआन शिकाइ का समर्थन किया।

   iv) युद्ध सामंत अपने हित साधने से ज्यादा जनता के कल्याण में रुचिशील थे।

3) लगभग 10 पंक्तियों में युद्ध सामंतों की सेनाओं के गठन में योगदान देने वाले कारकों का विवेचन कीजिए।

....
....
....
....
....
....
....
....
....

27.5 युद्ध सामंतवाद और चीनी समाज

पिछले अनुच्छेद में हम देख चुके हैं कि अपने बीच चीन का बंटवारा कर लेने वाले युद्ध सामंत योग्यताओं और सामाजिक रवैयों के मामले में एक-दूसरे से बहुत भिन्न थे। इसलिए जिन स्थितियों का पोषण उन्होंने किया वे भी विभिन्न स्थानों और अवधियों में भिन्न-भिन्न रहीं, क्योंकि एक के बाद दूसरा सेनापति स्थानीय या प्रादेशिक स्तर पर पदासीन होता रहा। युद्ध सामंतों के शोषण के विशिष्ट स्वरूपों के बारे में, या उसके हाथों बनी मिल्कियतों के बारे में, कोई भी वक्तव्य किसी एक अवधि में समचे चीन पर लागू नहीं होता। फिर भी यह कहना सही है कि युद्ध सामंत लाखों चीनियों के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आतंक और शोषण का कारण रहे। धन के लिए युद्ध सामंतों की लोलुपता तृप्त न होने वाली थी। तभी तो सैन्यवादियों ने जनता पर अतिशय व्यापक कर लगाये। उन्होंने बड़े पैमाने पर बेकार नोट भी छापे और लोगों को इन्हें स्वीकार करने को मजबूर किया, जिससे व्यापारिक लेन-देन केवल एक प्रकार का संपत्तिहरण होकर रह गये। सैनिक और दूसरे अनुत्पादक उद्देश्यों में अंधाधुंध धन निकल जाने से व्यवस्थित आर्थिक गतिविधि और नियोजन में बाधा पड़ी जिससे निश्चित तौर पर चीन का आर्थिक विकास अवरुद्ध हुआ।

युद्ध सामंतवाद अकाल का कारण भी बना। कुछ प्रांतों में इन सामंतों ने नकदी फसल के तौर पर अफीम की जबरन खेती करवायी जिससे खाद्य फसलें उगाने वाली भूमि कम पड़ गयी। उन्होंने सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण सुविधाओं के लिए आरक्षित सरकारी कोष को कम कर दिया जिसके कारण कुछ विनाशकारी बाढ़ें आयीं। सैनिकों ने बोझा ढोने वाले पशुओं को अपने कब्जे में कर लिया जिससे सीधा आर्थिक नुकसान तो हुआ ही, खेती की उत्पादकता भी कम हो गयी। युद्ध सामंतों के दौर में उत्तर चीन में पड़े भयंकर अकाल स्पष्ट तौर पर युद्ध नेताओं के कुशासन की देन थे। अनेक क्षेत्रों में, झुंड के झुंड अनियंत्रित और अनुशासनहीन सिपाही देहातों में घूमते और किसानों को अपना शिकार बनाते थे। ये वे क्षेत्र थे, जहां संगठित सेनाओं की कार्यवाहियाँ कम गंभीर थीं। हजारों लुटेरे और सैनिक देहात पर निर्भर करते थे। लूट, डकैती और हिंसा आम बात हो गयी थी। विजेता सैनिकों, और भागते सैनिकों को भी, जहां मौका मिलता, वे लूटमार करते थे। युद्धों में अक्सर नागरिकों के जान-माल की बर्बादी होती, सरकारी नौकरियां उपेक्षित या अनुपस्थित रहतीं, और भ्रष्टाचार अव्यवस्था और शोषण आम हो गये थे। उस दौर के विप्लव में हजारों व्यक्तियों को अपने घरबार छोड़ कर देश के दूसरे हिस्सों में चला जाना पड़ा। कहा जाता है कि युद्ध सामंतों के कारण चीन में "इस शताब्दी का एक सबसे बड़ा आंतरिक पलायन" हुआ।

युद्ध सामंतवाद ने बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों के सबसे शक्तिशाली राजनीतिक आंदोलन, चीनी राष्ट्रवाद, के रूप को प्रभावित किया। राष्ट्रवाद आंशिक तौर पर युद्ध सामंतों द्वारा पोषित फूट और अंतर्राष्ट्रीय असुरक्षा का जवाब था। इसके अलावा, अनेक सामंतों ने अपनी कार्यवाहियों को वैधता देने की गरज से राष्ट्रभक्तिपूर्ण और राष्ट्रवादी नारों का उपयोग एक साधन के रूप में किया। युद्ध सामंतों का वास्तविक उद्देश्य जो भी रहा हो, इस तरह उन्होंने इस विचार का पोषण किया कि चीनियों को राष्ट्रीय स्थितियों, राष्ट्रीय लक्ष्यों को पूरा करने के प्रति चिंतित होना चाहिए।

लेकिन युद्ध सामंतों की गतिविधियों ने चीनी राष्ट्रवाद में एक मजबूत सैनिक आयाम बनाने में भी मदद की। युद्ध सामंत खुद तो एक राष्ट्रीय राजनीतिक शक्ति बना नहीं पाये, फिर भी उन्होंने गैर-सैनिक गुटों को तो ऐसा करने से रोका ही। इस तरह से उन्होंने चीनी राजनीति का और अधिक सैन्यीकरण नहीं होने दिया। जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, क्वोमिंतांग को युद्ध सामंतों से होड़ करने के लिए एक शक्तिशाली सेना बनानी पड़ी थी, और इस प्रक्रिया में सेना पार्टी पर हावी हो गयी। साम्यवादियों ने भी अपने अस्तित्व में आने के कुछ वर्षों के भीतर ही, क्वोमिंतांग और दूसरे विपक्षियों से होड़ करने के लिए एक मजबूत सेना बनाने की आवश्यकता को महसूस कर लिया था।

जो भी हो अंतिम विश्लेषण में यही बात सामने आती है कि यह सैन्यीकरण न तो गहन था और न ही स्थायी। युद्ध सामंतवाद के दो प्रकट रूप से परस्पर विरोधी तथ्य सामने आये :

i) आधुनिक चीन में राजनीतिक शक्ति को सैनिक शक्ति से अलग नहीं किया जा सकता, और

ii) सैनिक शक्ति अपने आप में राजनीतिक शक्ति के लिए पर्याप्त आधार नहीं है, जैसा कि युद्ध सामंतों की विफलता दिखाती है।

राष्ट्रवाद पर भी सभी ने जोर दिया। किसी भी युद्ध सामंत ने कभी किसी नये राज्य की घोषणा नहीं की, न ही यह संकेत दिया कि उसकी पृथकता स्थायी थी। युद्ध सामंतों ने अपने सार्वजनिक वक्तव्यों में नागरिक या गैर-सैनिक शासन की मजबूत परंपरा को भी माना। साथ ही, उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि नागरिक शासन सैनिक शासन से श्रेष्ठ न हो। एक इतिहासकार, जेम्स शेरीडन, ने टिप्पणी दी है कि:

> .... युद्ध सामंतों के योगदान से चीनी राजनीति के अस्थायी सैन्यीकरण के बावजूद, चीन में सत्ता के संघर्ष में अंतिम विजेता साम्यवादी पार्टी इस बुनियादी सिद्धांत को लेकर चली कि पार्टी को बंदूक पर नियंत्रण रखना चाहिए।

इसी तरह युद्ध सामंतों की प्रादेशिक शक्ति ने चीन में प्रादेशिक विभाजन को मजबूत करने के लिए कुछ नहीं किया। प्रदेशों का एकताबद्ध चीन में एक सामान्य अस्तित्व था, इस तथ्य से यह अर्थ निकलता है कि युद्ध सामंतों का क्षेत्रवाद उतनी विनाशकारी शक्ति नहीं थी जितनी कि वह अन्यथा हो सकती थी। राष्ट्रीय एकता की बहाली के लिए क्षेत्रवाद को नहीं बल्कि क्षेत्रवाद पर पलने वाली स्वाधीन सैनिक शक्ति को नष्ट करना आवश्यक था।

अधिकांश युद्ध सामंत पारंपरिक मूल्यों से मजबूती से जुड़े रूढ़िवादी व्यक्ति थे। विरोधाभास यह रहा कि उन्होंने जिस फूट और अव्यवस्था का पोषण किया, उन्हीं के कारण बौद्धिक अनेकता को पनपने का सुअवसर मिला। विश्वविद्यालयों, पत्रिका प्रकाशन, उद्योगों और चीन के बौद्धिक जीवन के दूसरे अभिकरणों पर दक्षता के साथ नियंत्रण करने की क्षमता न तो केंद्र सरकार में थी, न ही प्रांतीय युद्ध सामंतों में। उन वर्षों में चीनी बुद्धिजीवी, आंशिक तौर पर युद्ध सामंतवाद के जवाब में, उस गहन विचार-विमर्श में लगे थे कि चीन को किन तरीकों से आधुनिक और मजबूत बनाया जा सकता था। 1921 में साम्यवादी पार्टी की स्थापना और 1924 में क्वोमिंतांग का पुनर्गठन आंशिक तौर पर इस बौद्धिक उत्कर्ष की देन थे। इस तरह, एक ओर तो युद्ध सामंतवाद के वर्ष बीसवीं शताब्दी में राजनीतिक एकता की कमजोर स्थिति के प्रतीक थे, और दूसरी ओर, वे बौद्धिक और साहित्यिक उपलब्धि के चरम का भी प्रतीक थे। उस विप्लव और खून खराबे वाले युग में से आंशिक तौर पर युद्ध सामंतों के जवाब में वे बौद्धिक और सामाजिक आंदोलन से प्रभावित हुए जिनकी परिणति चीन के पुनरेकीकरण और कायाकल्प में हुई।

बोध प्रश्न 2

1) निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही (✓) हैं, और कौन-से गलत (×)? निशान लगाइए।

   i) युद्ध सामंतवाद से बनी स्थितियाँ पूरे चीन में एक सी थीं।

   ii) युद्ध सामंतों ने अपने खुद ।

   iii) युद्ध सामंतों ने अपने खुद के हितों को साधने के लिए राष्ट्रभक्तिपूर्ण नारों का इस्तेमाल किया।

   iv) युद्ध सामंतों के दौर में राजनीतिक शक्ति को सैनिक शक्ति के बिना व्यक्त किया जा सकता था।

2) लगभग 15 पंक्तियों में चीनी समाज पर युद्ध सामंतवाद के प्रभाव का विवेचन करें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....

....

....

....

....

....

....

27.6 क्वोमिंतांग का उदय

अपने जन्म से ही, क्वोमिंतांग का इतिहास उसके नेताओं के व्यक्तित्वों का परस्पर प्रभाव रहा है। पहले सन यात सेन और हवांग शिंग और फिर च्यांग काई शेक। यन यात सेन और हवांग शिंग ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत गुप्त संगठनों के नेताओं के रूप में की, जिनका 1905 में तुंग मेंग हुई में विलय हो गया। उसके बाद से सन यात सेन मृत्यु पर्यन्त उस संगठन का निर्विवाद नेता रहा। सन यात सेन की मृत्यु 1925 में हुई। तुंग मेंग हुई के नेतृत्व में मांचू विरोधी आंदोलन आगे बढ़ा तो अनेक अवसरवादी और स्वार्थी लोग इसमें शामिल हो गये। इसी तरह, यह महसूस करने वाले अनेक उच्चाधिकारियों और परंपरावादी विद्वानों ने भी विजेता पक्ष में शामिल हो जाने का निर्णय ले लिया कि मांचुओं के प्रति निष्ठावान रहने में कोई लाभ नहीं था। इस कारण तुंग मेंग हुई के लिए प्रगति और विकास की कोई एक समान नीति बनाना कठिन हो गया। सन यात सेन के युआन शिकाई के पक्ष में राष्ट्रपति पद छोड़ने और कुछ समय के लिए राजनीतिक रूप से सक्रिय न रहने का भी क्वोमिंतांग के संगठन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। हवांग शिंग भी निष्क्रिय रहा, उसने अपनी सेना को इस आशा से भंग कर दिया कि दूसरे सैनिक नेता भी ऐसा ही करेंगे। यह चीन का दुर्भाग्य रहा कि इस उदाहरणीय आचरण का अनुसरण नहीं किया गया।

सुंग जियाओरेन के राजनीतिक विचार सन और हवांग से भिन्न थे। सुंग चीन में मंत्रिमंडलीय ढंग की सरकार स्थापित करने और उसकी उपलब्धियों में क्वोमिंतांग को एक निर्णायक भूमिका देने को कृतसंकल्प था। सुंग स्वार्थी व्यक्ति नहीं, बल्कि उत्साही आदर्शवादी और प्रखर बुद्धि का था। उसकी आस्था संसदीय जनतंत्र, मंत्रिमंडलीय सरकार और दलीय प्रणाली में थी। उसकी आशा यह थी कि केवल इसी तरह की प्रणाली के माध्यम से चीन प्रगति कर सकता और स्थिर हो सकता था, और सैनिकों को नागरिक राजनीति से बाहर करने का यह सबसे अच्छा तरीका था। संवैधानिक व्यवस्था में पार्टी को एक प्रभावी माध्यम बनाने की गरज से सन ने अगस्त, 1912 में संगठन को फिर से दिशा दी। इस नये संगठन में तुंग मेंग हुई को केंद्र में रखा गया और दूसरी नवोदित छोटी पार्टियाँ उसमें शामिल हो गयीं। 1912-13 के चुनाव क्वोमिंतांग के लिए भी और व्यक्तिगत तौर पर सुंग जियाओरेन के लिए भी सफलदायी रहे। वह सरकार का गठन करने को तैयार था। युवान शिकाई ने सुंग की सफलता से भयभीत होकर संसद बुलाये जाने से पहले ही उसकी हत्या करवा दी।

क्वोमिंतांग के नेताओं ने समझ लिया कि सुंग की हत्या और पुनर्गठन ऋण का इस्तेमाल युआन की शक्ति को मजबूत करने के लिए किया जाएगा। उन्हें अपना राजनीतिक भविष्य अंधकारमय लगा। उन्होंने इस बात को समझा कि 1911 की क्रांति का अंत तब तक नहीं होता जब तक युआन के हाथों सत्ता थी। इसी स्थिति में 1913 की दूसरी क्रांति हुई। लेकिन उस समय तक क्वोमिंतांग अपने आपको व्यापक जनाधार से काट चुकी थी। युआन शिकाई को साम्राज्यवादियों का समर्थन प्राप्त था। उसी वर्ष नवम्बर में, युआन ने क्वोमिंतांग को भंग करके उसे अवैध घोषित कर दिया। उसके तमाम समर्पित सदस्य भूमिगत हो गये।

एक भूमिगत संगठन के रूप में उसने अपना नाम चीनी क्रांतिकारी पार्टी (क्वोमिंतांग) रख लिया। संगठन के नेता, सन यात सेन का राजनीतिक दर्शन पार्टी की विचारधारा रही। सन ने तीन जन सिद्धांतों और तीन शासकीय चरणों पर जोर दिया।

तीन जन सिद्धांतों में थे :

- जनता का राष्ट्रवाद

- जनता का जनतंत्र, और
- जनता और आजीविका।

शासकीय चरणों में सरकार की उसकी अवधारणा का अभिप्राय यह था कि चीन को चरणों में एक प्रकार की सरकार से दूसरी उच्चतर प्रकार की सरकार की ओर बढ़ना चाहिए :

- पहले प्रकार की सरकार सैनिक सरकार होगी,
- दूसरे चरण में चीन को क्वोमिंतांग के राजनीतिक संरक्षण में रहना था, और
- अंत में चीन में संवैधानिक सरकार होगी।

सन ने सबसे पहले 1905 में इन विचारों को व्यक्त किया था। ये विचार चीनी क्रांतिकारी पार्टी की अधिकारिक विचारधारा हो गये (देखिए इकाई (21)।

इस पार्टी के सदस्यों से सन ने निष्ठा और उंगलियों के निशान की मांग की। सदस्यों को तीन श्रेणियों में बाँटा गया :

i) संस्थापक सदस्य,

ii) सक्रिय सदस्य, और

iii) साधारण सदस्य।

सन के निकटतम साथी, हवांग शिंग ने प्रकट तौर पर इस तरह के सदस्यों के स्तरीकरण और उनके उंगलियों के निशान लेने पर आपत्ति की। मतभेद बढ़े और वे अलग हो गए। हवांग शिंग के स्थान पर क्रांतिकारी विश्वसनीयता वाले सैनिक गवर्नर चेन ची में को सन का मुख्य सहायक नियुक्त किया गया। लेकिन यह पार्टी एक जनाधार वाला संगठन नहीं बन सका, क्योंकि अनेक लोग इसे किसी गुप्त संगठन से बिल्कुल भी भिन्न नहीं मानते थे। पहले जिन कुछ बुद्धिजीवियों ने सन के साथ अपने आपको झोंक दिया था, उन्होंने अब इस पार्टी में शामिल होने से मना कर दिया। इसके स्थान पर उन्होंने यूरोपीय मामलों की अनुसंधान समिति का गठन कर लिया। तथाकथित तौर पर यह एक विवेचन गुट था, लेकिन वास्तव में इसने एक राजनीतिक दल की तरह काम किया।

चीनी क्रांतिकारी पार्टी के खाते में बहुत कम उपलब्धियाँ थीं। एक विफल विद्रोह के अलावा, इसकी एकमात्र दूसरी भूमिका युआन शिकाई के खिलाफ अभियान में रही। कुल मिलाकर यह पार्टी जनता के नेतृत्व संभालने में विफल रही, और उभरते सैनिक कुलीनों के खिलाफ किसी जन आंदोलन का नेतृत्व करने की स्थिति में नहीं थी।

राजनीतिक परिदृश्य से युआन शिकाई के गायब हो जाने के बाद क्वोमिंतांग के तत्व विभिन्न गुटों और धड़ों में बंट गये। 1916-17 में, क्वोमिंतांग के पूर्ववर्ती सदस्य दक्षिण से वाम की ओर इस तरह गुटों में बंट गये : राजनीतिक अध्ययन समिति, श्रेष्ठ मित्र समिति, राजनीति सभा और जन मित्र समिति। राजनीतिक अध्ययन समिति उत्तरी सैन्यवादियों के साथ सौदेबाजी करना चाहती थी। जन मित्र समिति के अधिकांश सदस्य सन के अनुयायी और क्रांतिकारी पार्टी के सदस्य थे और वे तुआन ची जुई के कट्टर विरोधी थे। इन वर्षों के दौरान कैंटन स्थित दक्षिणी सरकार पुराने संविधान और पुरानी संसद की बहाली पर जोर देती रही। राजनीतिक अध्ययन समिति दक्षिणी सैन्यवादियों के गठबंधन में तो रही ही, लेकिन उसके उत्तरी सैन्यवादियों से भी संबंध रहे। इसके कारण सन यात सेन को अंतहीन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

सन् 1917 के अंतिम महीनों में पीकिंग में फेंग ग्वाओजांग के राष्ट्रपति का पद संभालने के बाद संसद के क्वोमिंतांग गुटों ने कैंटन में एक विशेष सत्र शुरू किया और सन को प्रधान सेनापति चुन लिया। पीकिंग सरकार के साथ शांति के इच्छुक राजनीतिक अध्ययन समिति और जन मित्र समिति ने प्रधान सेनापति के पद को समाप्त कर दिया और उसे ऐसा पद दे दिया जिसमें बहुत अधिकार नहीं थे। सन ने अगस्त, 1919 में त्याग पत्र दे दिया। सन यात सेन के इस अनुभव ने उसके मन में न केवल अपने कुछ पूववर्ती अनुयायियों के प्रति, बल्कि दलगत राजनीति और संसदीय प्रणाली के प्रति भी तिरस्कार का भाव पैदा कर दिया। वह भिन्न ढंग से सोचने लगा। एक ओर तो वह कैंटन में एक मजबूत क्रांतिकारी अड्डा कायम करने को कृत संकल्प था, जिसके लिए उसने दूसरे सैनिक गुटों के साथ गठबंधन किया। दूसरी ओर, वह एक भिन्न युग की नयी चुनौतियों का जवाब देने में सक्षम एक संगठन, कायाकल्पित क्वोमिंतांग के विचार पर चिंतन करने लगा। उसने नयी सोवियत

सरकार के दूतों के साथ परामर्श शुरू कर दिया। उसके चिंतन में इस बदलाव के परिणामस्वरूप 1924 में, सोवियत साम्यवादी पार्टी की तर्ज पर क्वोमिंतांग का पुनर्गठन हुआ।

बोध प्रश्न 3

1) लगभग 15 पंक्तियों में चीन की राजनीति में क्वोमिंतांग की भूमिका का विवेचन कीजिए।

2) सन यात-सेन के मोहभंग के क्या कारण [illegible]। 5 पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

27.7 चार मई की घटना

इकाई 21 में हमने चार मई के आंदोलन का उल्लेख किया था। यहाँ हम इस घटना से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर चर्चा कर रहे हैं। वैसे इस आंदोलन के सांस्कृतिक आयामों पर इकाई 28 में चर्चा की जाएगी। युआन शिकाई की मर्यादाहीन महत्वाकांक्षाएँ, युद्ध सामंतों का उदय और राजनीतिक स्तरीकरण 1911 की क्रांति के दुखद परिणाम रहे। इसी दौर में चीन में संस्कृति, दर्शन, शिक्षा और राजनीति के क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव भी देखने में आया। चार मई की घटना को चीन की "सांस्कृतिक क्रांति", "साहित्यिक क्रांति", "चीन का पुनर्जागरण", "ज्ञानोदय" और "पुनरुत्थान" आदि भी कहा जाता है। यह कोई एक रूप या सुसंगठित आंदोलन नहीं था, बल्कि अनेक गतिविधियों का सम्मिश्रण था। इस आंदोलन में विविध विचार काम कर रहे थे, लेकिन वे सभी एक समेकित घटना के अंग प्रतीत होते थे। वास्तव में, अधिकांश इतिहासकार यह स्वीकार करते हैं कि चीनी क्रांति की शुरुआत चार मई की घटना से होती है। हमें 1919 की चार मई की घटना और चार मई का आंदोलन कही जाने वाली घटना में भेद करना होगा। जो आंदोलन 1915 के आसपास शुरू हुआ था, उसे बाद में 1919 की घटना के बाद यह नाम दे दिया गया था।

जैसा कि हम इकाई 21 में विवेचन कर चुके हैं, चार मई की घटना एक विशाल प्रदर्शन था। इस प्रदर्शन का आयोजन पीकिंग विश्वविद्यालय और कुछ दूसरी उच्च शिक्षा संस्थाओं के छात्रों ने 1919 में उस तारीख को तियानान मेन चौक पर किया था। ये छात्र वर्साय की उस संभावी संधि का विरोध कर रहे थे जिस पर प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति पर पेरिस में बातचीत हो रही थी। चीन में इस आशय की खबरें पहुँच रही थीं कि जापान ने यह मांग की थी कि जर्मनी ने असमान संधि व्यवस्था के तहत शांतुंग पर जो कब्जा कर लिया था उस पर क्षेत्रातीत अधिकारों का स्वतः जापान को हस्तांतरण हो जाना चाहिए। इन खबरों में इस बात का संकेत भी मिलता था कि इंग्लैंड और फ्रांस जैसी दूसरी साम्राज्यवादी ताकतें जापान की मांग पूरी करने की इच्छुक थीं। एक बार फिर चीनियों की राष्ट्रवादी भावनाओं को ठेस पहुँची। पीकिंग का युद्ध सामंतों का शासन तो शांतुंग संबंधी संधि पर हस्ताक्षर करने को तैयार था, लेकिन जनता ने साम्राज्यवादी भावनाओं को खुलकर व्यक्त किया और छात्रों ने आंदोलन में सबसे सक्रिय हिस्सा लिया। चार मई की जिस घटना में छात्रों की राजनीतिक सक्रियता चरम पर पहुँच गयी थी उसका विस्तार से विवरण देने से पहले उस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है जिसमें राष्ट्रवाद के पक्ष में साम्राज्यवाद के खिलाफ इतना बड़ा अभूतपूर्व छात्र आंदोलन उठ सका।

चीन में 1911 की क्रांति एक स्थिर और स्वच्छ राजनीतिक व्यवस्था का विकास करने में विफल रही। चीन की अव्यवस्थित और भ्रष्ट अंदरूनी राजनीति और उसकी संप्रभुता पर सतत साम्राज्यवादी अतिक्रमण के फलस्वरूप राष्ट्रभक्त शक्तियाँ एक बार फिर एकजुट हो गयीं। लेकिन चीन में सामाजिक और वैचारिक परिवेश वैसा ही बना रहा जैसा वह 1911 से पहले के दौर में था।

एक सुविदित तथ्य यह था कि पीकिंग स्थित युद्ध सामंत सरकार में जापान समर्थक तत्व थे। 1915 की जापानी इक्कीस मांगों को देखते हुए यह खतरे की घंटी थी। विभिन्न गुटों ने पेरिस शांति सम्मेलन में ताकतों के बीच चल रही गुप्त कूटनीति का विरोध किया। 1918 में, छात्रों और सौदागरों की ओर से सरकार को एक याचिका दी गयी जिसमें शांतुंग पर जर्मनी के पूर्व आधिपत्य को जापान को स्थानांतरित करने के मुद्दे पर गहन चिंता व्यक्त की गयी। जब चीन में इस आशय की खबर पहुँची कि पेरिस सम्मेलन में चीन के प्रस्तावों को ठुकरा दिया गया था तो, इससे प्रचंड साम्राज्यवाद विरोधी भावनाएँ भड़क उठीं। चीनियों के मन सभी ताकतों के प्रति संदेह से भर गये। कुछ ही दिनों के अंतराल में कई समितियाँ उठ खड़ी हुईं। 1 मई, 1919 और 3 मई 1918 के बीच पीकिंग विश्वविद्यालय के छात्रों ने परिसर में सभाएँ की जो भाववेश से भरी थीं। छात्रों में यह महसूस किया गया कि उन्हें कार्यवाही करनी होगी, नहीं तो चीन की अधीनता का कभी अंत नहीं होगा। 4 मई को दोपहर बाद एक अभूतपूर्व स्तर का विशाल प्रदर्शन तियानान मेन (स्वर्गीय शांति का द्वार) चौक पर किया गया। पीकिंग विश्वविद्यालय और तेरह और कॉलेजों के हजारों छात्रों ने कई घंटों तक सड़कों पर जलूस निकाला। यह प्रदर्शन, कुल मिलाकर शांतिपूर्ण रहा। वैसे लड़ाकू छात्रों के एक गुट ने कुछ नागरिक और सैनिक अधिकारियों पर हमला किया। इन अधिकारियों के विषय में यह विश्वास किया जाता था कि उनकी भावनाएँ जापान समर्थक थीं। जनता के इस विरोध और आग्रह के जवाब में, चीन प्रतिनिधि मंडल ने पेरिस में चल रही बातचीत का बहिष्कार कर दिया और त्यागपत्र दे दिया। लेकिन यह काम 28 जून को ही हो सका।

चार मई और 28 जून, 1919 के बीच बड़ी संख्या में जन सभाएँ और विचार-विमर्श हुए। छात्र जलूस निकालने और नये बुद्धिजीवियों को संगठित करने और दूसरे गुटों के साथ गठबंधन का प्रयास करने में लगे थे। सड़कों पर प्रदर्शन एक महीने और चले। सरकार ने पीकिंग विश्वविद्यालय को बंद करना और छात्रों को भड़काने के अपराध में जाई युआपे को बर्खास्त करना चाहा। सरकार जनता के समर्थन का सही आकलन नहीं कर पायी, जिसके बल पर छात्रों के प्रदर्शन दूसरे शहरों तक फैल गये। एक पीकिंग छात्र संघ गठित हो गया और बाद में मजदूर वर्ग की पूरी भागेदारी के साथ बड़े शहरों में आम हड़ताल की गयी। छात्रों ने सौदागरों, उद्योगपतियों और मजदूरों के साथ गठबंधन किए। आंदोलन, हड़तालें और प्रदर्शन हुए जिसके परिणामस्वरूप सरकार ने व्यापक गिरफ्तारियाँ और सख्त कार्यवाही की। चीनी प्रतिनिधि मंडल का वर्साय की संधि का हिस्सा बनने से मना करना व्यापक विरोध प्रदर्शनों की पहली सफलता थी। आने वाले दौर में हमें विभिन्न सामाजिक गुटों के बीच घनिष्ठतर संपर्क और नये बुद्धिजीवी, सामाजिक और राजनीतिक संगठनों का उदय देखने को मिलता है। इस तरह, चार मई की घटना राष्ट्रवादी और वर्गीय हितों की एक सम्मिलित अभिव्यक्ति थी। 1919 की घटनाओं के बाद भी राष्ट्र का सांस्कृतिक

रूपांतरण और भी अधिक ताकत और तेजी के साथ चलता रहा। 1939 के दशक के प्रारंभिक वर्षों तक के काल को चीनी इतिहास में चार मई का युग कहा जाता है, क्योंकि तब तक नये विचार दृष्टिकोण और मतों की निरंतर अभिव्यक्ति और परीक्षण चल रहा था। सोवियत संघ में समाजवाद की जीत और निरंकुश जार शासन का तख्ता पलटने से चीन में अनेक युवा बुद्धिजीवियों को प्रेरणा मिली। तुरंत इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए बहसें और विचार-विमर्श हुए कि क्या समाजवाद चीन की समस्याओं का समाधान था। लगभग उसी समय अंग्रेज दार्शनिक, बर्ट्रेंड रसेल चीन की व्याख्यान यात्रा पर था। बर्ट्रेंड रसेल ने चीन के लिए एक उदारवादी राजनीतिक व्यवस्था की वकालत की, क्योंकि उसके विचार में बोल्शेविकों का रास्ता अप्रासंगिक था। इससे और बहसें उठ खड़ी हुईं। पहले चीनियों को मार्क्स का जो लेखन उपलब्ध नहीं था, वह अब लोकप्रिय हो रहा था। विविध लेखों के अनुवाद भी उपलब्ध होने लगे थे। प्रमुख बुद्धिजीवियों में ली ता चाओ और चेन तु शू मार्क्सवाद की ओर झुके, जबकि हू शी और दूसरे बुद्धिजीवियों ने उदारवाद का समर्थन किया। मार्क्सवादी गुट ने अंत में 1921 में, चीनी साम्यवादी पार्टी का गठन किया। इसलिए यह कहना सही है कि चीन में साम्यवाद चार मई के आंदोलन का सीधा परिणाम था।

बोध प्रश्न 4

1) लगभग 10 पंक्तियों में चार मई की घटना का विवेचन कीजिए।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

2) लगभग 5 पंक्तियों में चीन पर अक्टूबर क्रांति के प्रभावों को गिनाइए।

....
....
....
....
....

27.8 सारांश

सन् 1911 और 1919 के बीच के दौर में चीनी समाज में दूरगामी बदलाव हुए। 1911 में शाही व्यवस्था के अंत का परिणाम तुरंत एक बेहतर राजनीतिक व्यवस्था के रूप में सामने नहीं आया। एक ओर, सैन्यवाद, सत्तावाद, धड़ेबाजी और सत्ता संघर्ष राजनीतिक परिदृष्य में हावी रहे। दूसरी ओर, और भी अधिक निर्लज्ज और पाशविक किस्म के साम्राज्यवाद ने चीन से उसकी बची-खुची गरिमा भी छीन लेने का प्रयास किया। दूसरे शब्दों में, इस दौर में जापानी साम्राज्यवाद की उन्नति देखने को मिली। युद्ध सामंतवाद व्याप्त था और कोई एक सरकार नहीं थी। लेकिन एक सकारात्मक पक्ष यह भी था कि नये विचारों और संगठनों का उदय हुआ जिन्होंने चीन को इस निराशाजनक स्थिति से बाहर निकाला।

27.9 शब्दावली

सैन्यवादी : इस शब्द का इस्तेमाल युद्ध सामंतों के लिए होता है।

युद्ध सामंत : निजी सेनाओं वाले प्रादेशिक फौजी।

27.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) अपना उत्तर भाग 27.2 के आधार पर लिखिए।
2) i) ✓ ii) ✗ iii) ✓ iv) ✓
3) अपना उत्तर उपभाग 27.4.1 के आधार पर लिखिए।

बोध प्रश्न 2

1) i) ✗ ii) ✓ iii) ✓ iv) ✗
2) अपना उत्तर भाग 27.5 के आधार पर लिखिए।

बोध प्रश्न 3

1) अपना उत्तर भाग 27.6 के आधार पर लिखिए।
2) अपने उत्तर में क्वोमिंतांग के अंदर गुटबाजी, आंतरिक लड़ाई, दृष्टिकोण के अंतर आदि को शामिल कीजिए। देखिए भाग 27.6 का अंतिम अंश।

बोध प्रश्न 4

1) देखिए भाग 27.7
2) देखिए भाग 27.7 का अंतिम अंश।